7

साठोत्तरी कविता
(सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और दुष्यंत कुमार)

हिंदी में साठोत्तरी कविता का आरंभ 1960 ई. के बाद हुआ। इस युग की कविताओं की प्रमुख प्रवृत्तियाँ अपने बीज रूप में 'नयी कविता' में विद्यमान थीं। असंतोष, अस्वीकृति और विद्रोह का जो स्वर नयी कविता में थोड़ा मंद था वह सन् साठ के बाद की कविता में बहुत स्पष्टता से उभरा और इसने तीखे व्यंग्य और विद्रोह का रूप धारण कर लिया। इस धारा के कवियों ने नयी कविता की काव्यगत रूढ़ियों को अस्वीकार करके कविता को पुनः जीवन के साथ जोड़ दिया। छोटी-छोटी मामूली बातों की ओर झुकाव और उसकी अभिव्यक्ति इस कविता की सबसे बड़ी विशेषता है। ये कविताएँ रोजमर्रा की ज़िंदगी की अनुभूति को बड़ी सहजता से अभिव्यक्त करती हैं।

इस धारा के कवियों में एक ओर व्यक्तिगत पीड़ा को और स्थिति की विषमता को व्यक्त करने वाले कवि हैं, तो दूसरी ओर स्थिति की विषमता के विरुद्ध विद्रोह और आक्रोश व्यक्त करने वाले कवि भी हैं। नयी कविता के युग में 'नवगीत' का जो दौर चला उसे साठ के बाद की कविताओं में भी प्रतिष्ठा मिली। इस दौर के कवि ग़ज़लकार भी थे, इनमें दुष्यंत कुमार प्रमुख हैं। इन कविताओं की भाषा में बातचीत की सहजता है।

आइए, इस पाठ में साठोत्तरी कविता के दो महत्वपूर्ण कवियों– दुष्यंत कुमार और सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविताएँ पढ़ें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- पाशविकता के विरुद्ध संघर्ष करने की कला का वर्णन कर सकेंगे;
- मानवीयता की स्थापना और उसकी विजय का महत्व प्रस्तुत कर सकेंगे;

- सामूहिक चेतना और संघर्षशीलता के महत्व की व्याख्या कर सकेंगे;
- आज के संदर्भ में साठोत्तरी कविताओं की प्रासंगिकता पर अपना मत प्रस्तुत कर सकेंगे;
- कविता के काव्य-सौन्दर्य का उल्लेख कर सकेंगे;
- ग़ज़ल विधा की शैली और भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- समाज व देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों को समझते हुए अपना मत व्यक्त कर सकेंगे।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

(क) भेड़िए

हमारे प्राचीन साहित्य में देवताओं, दानवों एवं मानव चरित्रों के साथ-साथ पशु-पक्षियों का भी खूब चित्रण हुआ है। रामायण, महाभारत, पंचतंत्र की कथाओं आदि में भी विभिन्न पशु-पक्षियों के बहाने कोई-न-कोई संदेश देने का उद्देश्य रचनाकार का रहा है। मनुष्य से भिन्न प्राणियों को कथा का हिस्सा बनाकर रचनाकारों ने मनुष्य-समाज के समक्ष आदर्श प्रस्तुत किया है एवं मनुष्य की संवेदना में विस्तार करने का प्रयास किया है। आज भी ऐसे प्रयोग जारी हैं। हाँ, अभिव्यक्ति का ढंग जरूर परिवर्तित हो रहा है। हमारे परिवेश में विषय भी बदल रहे हैं। अभिव्यक्ति के नए ढंग और भावबोध से परिचित कराने के लिए सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता 'भेड़िया' का पाठ प्रस्तुत है। सबसे पहले आप कविता पढ़िए और इसका आनंद लीजिए।

7.1 मूल पाठ

आइए, इस कविता को एक बार ध्यान से पढ़ते हैं–

चित्र 7.1 : सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

भेड़िया

भेड़िया गुर्राता है
तुम मशाल जलाओ।
उसमें और तुममें
यही बुनियादी फ़र्क है

भेड़िया मशाल नहीं जला सकता।

अब तुम मशाल उठा
भेड़िये के करीब जाओ
भेड़िया भागेगा।

करोड़ों हाथों में मशाल लेकर
एक-एक झाड़ी की ओर बढ़ो
सब भेड़िये भागेंगे।

टिप्पणी

फिर उन्हें जंगल के बाहर निकाल
बर्फ में छोड़ दो
भूखे भेड़िये आपस में गुर्राएँगे
एक-दूसरे को चीथ खाएँगे।

भेड़िये मर चुके होंगे
और तुम ?

7.2 आइए समझें

प्रसंग– यह कविता हिंसक-शोषक-दमनकारी ताकतों के विरुद्ध आम आदमी को संगठित करने का संदेश देती है। प्रस्तुत अंश में वास्तविक मनुष्य एवं मनुष्य के भेष में भेड़ियों के बीच अंतर किया गया है और भेड़ियों के विरुद्ध आमजन को संगठित होने के लिए कहा गया है।

आइए, अब हम कविता के पहले अंश का भाव समझने के लिए इसे एक बार फिर से पढ़ लें।

अंश–1

भेड़िया गुर्राता है
तुम मशाल जलाओ।
उसमें और तुममें
यही बुनियादी फर्क है

भेड़िया मशाल नहीं जला सकता।

अब तुम मशाल उठा
भेड़िए के करीब जाओ
भेड़िया भागेगा।

व्याख्या – कविता के इस अंश को पढ़ने के बाद आप इतना तो समझ ही गए होंगे कि कवि द्वारा भेड़िए की हिंसक क्रूरता के विरुद्ध इंसानों को एकजुट होकर 'मशाल' जलाने की बात कही गई है। आप जानते हैं कि आग जलाने की कला इंसान ने सदियों पहले सीख ली थी। पशु आज भी आग जलाना नहीं जानता, बल्कि वह आग से डरता है। कवि ने इसीलिए हिंसक भेड़ियों के विरुद्ध मशाल जलाने की बात कही है।

कविता में 'भेड़िया' शब्द का प्रयोग प्रतीकात्मक अर्थ में किया गया है। भेड़िया उस वर्ग का प्रतीक है जो अपनी हिंसा, क्रूरता और लालच से व्यापक जन-समुदाय को डराकर उनके अधिकारों को छीन लेता है। यह कविता सामान्य जन को भेड़िए जैसे हिंसक, क्रूर, लालची लोगों से लड़ने का साहस जगाने का काम करती है।

आप यह जानते हैं कि भेड़िया एक जंगली जानवर है। यह हिंसक और क्रूर पशु है। हिंस्रता और क्रूरता पाशविक प्रवृत्ति है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु वह गुर्राता है। जैसा कि हम संकेत कर चुके हैं कि यहाँ भेड़िया केवल एक पशु नहीं है, एक प्रतीक भी है– दमन-शोषण, अन्याय और अत्याचार जैसे जनविरोधी कार्यों में लिप्त लोगों का। इसका केवल एक ही उद्देश्य रहता है कि किसी भी तरह वर्चस्व कायम रहे और स्वार्थ की पूर्ति होती रहे।

कविता की दूसरी पंक्ति में कवि ने 'तुम' सर्वनाम शब्द का प्रयोग किया है। 'तुम' वह जनसामान्य है जो सदियों से शोषित, अन्याय का शिकार, पीड़ित, उपेक्षित और शोषित जीवन जीने के लिए विवश है। इन्हीं मामूली लोगों से मशाल जलाने का आग्रह कवि कर रहा है। यहाँ मशाल भी प्रतीकात्मक है। संगठित होने की चेतना को जागृत करने की शक्ति सामान्यजन के पास होती है न कि अत्याचारी, शोषक और दमनकारी सत्ता के पास होती है। इसलिए,

टिप्पणी

कवि ने पाशविकता और मानवीयता में बुनियादी फ़र्क को रेखांकित करते हुए कहा है- तुम मशाल जला सकते हो जबकि भेड़िया इस आग से डरता है।

इस अंश की अगली पंक्ति में कवि ने मशाल उठाकर भेड़िए के सामने जाने की बात कही है। सदियों से जिसने सामान्य जन को डराकर अपनी सत्ता बनाए रखी थी, आज वह अपने सामने विरोध की मशाल देखकर भयभीत है। कवि का दृढ़ विश्वास है कि मशाल देखते ही भेड़िया भाग खड़ा होगा। संगठित शक्ति का सामना करना किसी भी क्रूर अमानवीय सत्ता के लिए एक चुनौती होती है। कवि का जनशक्ति में दृढ़ विश्वास है। इसलिए वह निश्चयपूर्वक कहता है- 'भेड़िया भागेगा।'

आगे आप दुष्यंत कुमार की कविता पढ़ेंगे, जिसमें उन्होंने 'अपने नहीं तो किसी और के सीने में ही आग जलने' की बात कही है। यहाँ भी आग जलने का अर्थ है अन्याय, दमन और शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने की चेतना जगाना।

टिप्पणी

1. आपने ध्यान दिया होगा कि कविता के आरंभ में कवि ने संकेतों के माध्यम से कविता को विशिष्ट अर्थ प्रदान किया है। सांकेतिकता अथवा प्रतीकात्मकता कविता को विशेष अर्थ प्रदान करती है।

2. आपने यह भी देखा होगा कि कविता की हरेक पंक्ति में क्रिया शब्द का प्रयोग हुआ है; जैसे- गुर्राना, जलाना, उठाना, जाना, भागना आदि। प्रश्न है कि कवि ने क्रियाओं का इतना अधिक प्रयोग क्यों किया है? ऐसा प्रतीत होता है कि सामान्य जन को क्रियाशील, कर्मशील बनाकर समाज-विरोधियों को खदेड़ना कवि का उद्देश्य है। 'भेड़िया भागेगा' काव्य-पंक्ति के माध्यम से यह बात सिद्ध होती है।

3. कवि ने पाशविकता और मानवीयता में भेद को रेखांकित करते हुए मनुष्यता का पक्ष लिया है। उसका मानना है कि पशविकता से लड़ने की ज़रूरत बार-बार पड़ती है। उसे एक बार में नहीं हराया जा सकता है। इसलिए समाज में जब-जब पशविकता पैदा होगी तब-तब उससे लड़ने के लिए हमें एकजुट होना पड़ेगा। उसके विरुद्ध मशाल जलानी होगी।

पाठगत प्रश्न 7.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. भेड़िया के गुर्राने का कारण है-

   (क) उसे बहुत भूख लगी है

   (ख) उसे बहुत गुस्सा आता है

(ग) उसे दूसरों को भयभीत करना है

(घ) उसे अपनी नाराजगी प्रकट करनी है।

2. 'तुम' का प्रयोग हुआ है–

(क) भेड़ियों के लिए

(ख) कवि के लिए

(ग) सामान्य जन के लिए

(घ) मशाल के लिए

3. भेड़िया मशाल नहीं जला सकता, क्योंकि–

(क) वह आग से बहुत अधिक डरता है

(ख) उसे मशाल जलाने की कला मालूम नहीं है

(ग) उसमें संगठन की चेतना ही नहीं है

(घ) उसके लिए मशाल जलाना समय बर्बाद करना है।

4. कविता में प्रयुक्त निम्नलिखित प्रतीकों का उनके अर्थों के साथ मिलान कीजिए :

भेड़िया	जनशक्ति
मशाल	शोषक
तुम	सामूहिक चेतना

अंश-2

आइए, हम पाठ के दूसरे अंश को समझने से पहले उसे ध्यानपूर्वक पुनः पढ़ लें।

प्रसंग – कविता के प्रस्तुत अंश में जनता को संगठित होकर आगे बढ़ने के लिए कहा गया है। यह जनता अपनी सामूहिक ताकत से भेड़ियों को इतना पीछे धकेल देती है कि वे भूख से व्याकुल होकर आपस में ही एक-दूसरे का विनाश करने लगते हैं और जनता की जीत होती है।

करोड़ों हाथों में मशाल लेकर
एक-एक झाड़ी की ओर बढ़ो
सब भेड़िये भागेंगे।

फिर उन्हें जंगल के बाहर निकाल
बर्फ में छोड़ दो
भूखे भेड़िये आपस में गुर्राएँगे
एक-दूसरे को चीथ खाएंगे।

भेड़िये मर चुके होंगे
और तुम ?

व्याख्या – आपने कविता के इस अंश का वाचन करते समय ध्यान दिया होगा कि कविता के पहले अंश में भेड़िया एकवचन में था लेकिन दूसरे अंश में 'भेड़िये' शब्द का प्रयोग बहुवचन में हुआ है। ऐसा क्यों हुआ है? आइए समझें। आप जानते हैं कि अपने निजी हितों के लिए समाज का शोषण और दमन करनेवाला कोई एक ही नहीं होता, बल्कि बहुत-से लोग होते हैं। ऐसे लोगों को कवि ने 'भेड़िये' कहा है।

आप जानते हैं कि भेड़िये जंगल की झाड़ियों में रहते हैं। ये झाड़ियाँ उनके किले हैं। वे यहाँ अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं। कवि का आग्रह है कि करोड़ों हाथों में मशाल थामकर

टिप्पणी

इन झाड़ियों की ओर बढ़ने से ही ये भेड़िए भागेंगे। कवि का विश्वास है कि करोड़ों की संख्या में आम जनता ही यह कार्य कर सकती है। इसी से शोषण समाप्त होगा और आमजन के जीवन में परिवर्तन संभव होगा। लेकिन ऐसा नहीं है कि इससे समाज सदा के लिए इनसे मुक्त हो जाएगा; क्योंकि ये अन्यायी, शोषक और उत्पीड़क लोग कहीं दूसरे लोक से नहीं आते हैं, बल्कि हमारे बीच से ही कुछ लोग भेड़िये बनकर सामने आ जाते हैं। ऐसी स्थिति में आमजन को भेड़ियों के विरुद्ध बार-बार सक्रिय होना पड़ेगा। कहीं किसी झाड़ी में, माँद में, किले में, महल में या हमारे आसपास कोई भेड़िया छिपा न रह जाए। इसकी पहचान ज़रूरी है– कवि का ऐसा दृढ़ विश्वास है। करोड़ों लोगों के मशाल उठा लेने से मानव-विरोधी शक्तियाँ भागेंगी। जब वे भागने लगें तो मशालधारी तब तक उनका पीछा करें जब तक कि जंगल की सीमा समाप्त न हो जाए और बर्फीला स्थान न मिल जाए। तमाम झाड़ियों से निकले भेड़िये बर्फ के प्रदेश में एक-दूसरे को देख गुर्राएँगे, लड़ेंगे, भिड़ेंगे, भूख के कारण एक-दूसरे को नोच डालेंगे। शोषक ही शोषक की हत्या में लिप्त हो जाएँगे। इस तरह से शोषकों के कुल का विनाश हो जाएगा तथा इन दमनकारी ताकतों का अंत होगा। यहाँ ''और तुम?'' से कवि का स्वप्न साकार हो रहा है कि मानवीयता और सामूहिक चेतना की जीत होने वाली है। जब भी इतिहास लिखा जाएगा उसमें यह लिपिबद्ध होगा कि शोषित और पीड़ित जनता ने अत्याचारी सत्ता को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

कविता के दोनों खंडों के अध्ययन के पश्चात आप समझ चुके होंगे कि कवि ने अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों की ओर संकेत किया है। सदियों से आम जन के सामाजिक और आर्थिक शोषण के ज़िम्मेदार भेड़ियों को समाप्त किए बिना समतामूलक समाज की स्थापना संभव नहीं है। देश में जंगलराज कायम करने वालों का निडर होकर सामना करना बहुत आवश्यक है। भेड़ियों से भागना समस्या का समाधान नहीं है, बल्कि उन्हें भगाना समस्या का समाधान है।

टिप्पणी

1. सर्वेश्वर की 'भेड़िया' शीर्षक से तीन कविताएँ हैं। ये इनके छठे कविता-संग्रह 'जंगल का दर्द' (1976) में संकलित हैं। इन कविताओं में कवि ने आम जनता का भेड़िया के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए आह्वान किया है। कवि का कहना है कि जनता स्वयं को असहाय समझती है, लेकिन संगठित जनशक्ति के सम्मुख शोषक वर्ग की सत्ता का बने रहना संभव नहीं है। यह कवि की कोरी कल्पना नहीं, उसका गहरा आत्मविश्वास है। इतिहास में जनशक्ति के सामने दमनकारी जनविरोधी सत्ताएँ बार-बार घुटने टेकती रही हैं।
2. उम्मीद है यह कविता आपको अच्छी लगी होगी। अब 'भेड़िये' शीर्षक अन्य दो कविताएँ भी आप एक बार पढ़ लीजिए। अन्य दोनों कविताएँ आपकी पढ़ी हुई कविता की पूरक रचनाएँ साबित होंगी। इससे आपकी समझ विकसित होगी। इस शीर्षक के अंतर्गत पहली कविता है–

भेड़िये की आँखें सुर्ख हैं

उसे तब तक घूरो
जब तक तुम्हारी आँखें
सुर्ख न हो जाएँ ।

और तुम कर भी क्या सकते हो
जब वह तुम्हारे सामने हो ?

यदि तुम मुँह छिपा भागोगे
तो भी तुम उसे
अपने भीतर इसी तरह खड़ा पाओगे
यदि बच रहे।

भेड़िये की आँखें सूर्ख हैं।
और तुम्हारी आँखें?

अब आप तीसरी कविता भी एक बार ध्यान से कर पढ़ लीजिए–

भेड़िये फिर आएँगे।

अचानक
तुममें से ही कोई एक दिन
भेड़िया बन जाएगा ।

भेड़िये का आना ज़रूरी है
तुम्हें ख़ुद को पहचानने के लिए

निर्भय होने का सुख जानने के लिए
मशाल उठाना सीखने के लिए।

इतिहास के जंगल में
हर बार भेड़िया माँद से निकाला जाएगा
आदमी साहस से, एक होकर,
मशाल लिए खड़ा होगा।

इतिहास जिंदा रहेगा
और तुम भी
और भेड़िया ?

7.3 भाव-सौन्दर्य

'भेड़िया' शीर्षक कविता प्रतीकात्मक है। भेड़िया शोषक वर्ग का प्रतीक है। शोषण, दमन, अन्याय, अत्याचार आदि मनुष्यविरोधी कार्यों से यह वर्ग अपना वर्चस्व कायम रखता है। यह

वर्ग परजीवी होता है। कवि ने संगठित किसानों, मज़दूरों और संघर्षशील लोगों के प्रति अपनी गहरी आस्था दिखाई है। बदलाव की चेतना इसी वर्ग में उभरती है, क्योंकि यह वर्ग सकर्मक होता है। कविता सामान्य जन से और पाठक से भी सीधे संवाद स्थापित करती है। कविता में पूछा गया प्रश्न आकर्षित करता है। यद्यपि कविता अतुकांत है, तथापि इसमें लयात्मकता बनी हुई है। कविता में इस बात पर जोर दिया गया है कि शोषण और दमन से मुक्त तभी हुआ जा सकता है जब लोगों में चेतना उत्पन्न हो। समाज के पीड़ित और उपेक्षित वर्ग में पाशविकता का निर्भीक होकर मुकाबला करने का साहस संचित हो। इस कविता की खूबसूरती यह है कि कवि ने शोषणकरने वालों के विरुद्ध हिंसक आंदोलन की वकालत नहीं की है, बस उन्हें खदेड़ने की बात कही है। खदेड़े गए भेड़िये आपस में लड़-भिड़कर खुद मर जाएँगे। कवि का दृढ़ विश्वास है कि पाशविक प्रवृत्ति पर मानवीय प्रवृत्ति की विजय होगी।

7.4 शिल्प-सौन्दर्य

कविता की भाषा सरल और सहज है। इसमें प्रयुक्त शब्द भी आसान और बोलचाल की भाषा के हैं। पूरी कविता में शायद ही ऐसा कोई कठिन शब्द हो, जिसका अर्थ पाठक अथवा श्रोता के लिए अबूझ हो। देशज शब्दों का खूब प्रयोग है। साथ ही क्रियात्मक शब्दों के प्रयोग में कवि को विशेष सफलता हासिल हुई है।

इस कविता की भाषिक विशेषताओं में उल्लेखनीय हैं- प्रतीकात्मकता, लयात्मकता और प्रभावोत्पादकता। ऐसा प्रतीत होता है कि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के लिए कविता कला की बाजीगरी नहीं, बल्कि लोकजीवन के यथार्थ से सीधे जूझने की एक प्रभावशाली कसौटी है।

'भेड़िया' जैसी कविता से गुज़रकर आम आदमी जीवन के यथार्थ से स्वाभाविक तौर पर रू-ब-रू होता है। यह कविता के भाषाई सौंदर्य का सबसे सुंदर उदाहरण है। व्यापक संवेदना और गहरे आक्रोश को रूपायित करने की शक्ति सर्वेश्वर की कविता की भाषा की मूलभूत विशेषता है।

पाठगत प्रश्न 7.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. करोड़ों हाथों का संबंध किनसे है–

   (क) देवताओं से (ख) आम आदमी से

   (ग) पूँजीपतियों से (घ) भेड़ियों से

2. हाथों में मशाल लेकर बढ़ने में कौन-सा भाव है–

   (क) संघर्षशीलता का (ख) अँधेरे को मिटाने का

   (ग) गर्माहट का (घ) प्रेम का

(ख) दुष्यंत कुमार

हम अक्सर अपने आस-पास हो रही घटनाओं पर आपस में चर्चा करते रहते हैं। ऐसी कई बातें हैं जो वर्षों से हमें परेशान करती रही हैं। कुछ लोग समस्याओं के समाधान की कोशिश करते हैं और अधिकांश लोग जैसी व्यवस्था चली आ रही है, उसका चुप रहकर अनुसरण करते रहते हैं, जो कुछ भी घटित हो रहा है उसे जीवन का हिस्सा मान लेते हैं। कवि या लेखक समाज की यथार्थ स्थिति को अपनी रचनाओं के माध्यम से उजागर करते हैं और शासन व व्यवस्था के लिए समाधान भी प्रस्तुत करते हैं।

चित्र 7.3 : दुष्यंत कुमार

हमारा देश आज भी कई सामाजिक, आर्थिक एवं अन्य असमानताओं और समस्याओं से जूझ रहा है। समाज में परिवर्तन के प्रति जो उदासीनता है उसे केंद्र में रखकर दुष्यंत कुमार ने एक ग़ज़ल लिखी है। इसमें उन्होंने आम आदमी को जागरूक करते हुए व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन के लिए आगे बढ़ने का आह्वान किया है। आइए, इस ग़ज़ल के माध्यम से कवि की भावनाओं और ग़ज़ल के संदेश को समझने का प्रयास करते हैं।

7.5 मूल पाठ

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

शब्दार्थ:

पीर–पीड़ा, कष्ट
बुनियाद–नींव, आधार
मकसद–लक्ष्य, उद्देश्य
सूरत–चेहरा, शक्ल
सीना–छाती, हृदय
लाश–शरीर, निष्क्रिय या संवेदनशून्य

बोध प्रश्न 7.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कवि आग्रह कर रहा है–

(क) राजनेताओं से (ख) सैनिकों से

(ग) युवाओं से (घ) देशवासियों से

2. 'गंगा निकलने' से कवि का आशय है–

(क) आंदोलन करना (ख) समाधान निकलना

(ग) समस्या पहचानना (घ) विद्रोह करना

3. 'आग जलानी चाहिए' से कवि का आशय है–

(क) ईर्ष्या व द्वेष की भावना (ख) क्रोध से तप्त होना

(ग) बदलाव के लिए संघर्ष-चेतना (घ) असहयोग की भावना

7.6 आइए समझें

अंश-1

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

प्रसंग – आप जानते हैं कि हमारे समाज व देश में ऐसी कई समस्याएँ हैं जो वर्षों से बनी हुई हैं। आप ऐसा महसूस भी कर रहे होंगे कि परिस्थितियाँ और व्यवस्था बदल नहीं रही है, बल्कि समय के साथ-साथ और बदतर होती जा रही हैं। कवि ने इसी बात को इन पंक्तियों में उद्घाटित किया है। यहाँ केवल समस्याओं का उल्लेख ही नहीं हुआ है, अपितु समाधान की ओर भी संकेत दिया गया।

हाशिए पर दिए गए अंश-1 को एक बार पढ़ लीजिए।

व्याख्या – दुष्यंत कुमार मानते हैं कि मनुष्य की पीड़ा अर्थात् उसके समाज की समस्याएँ पर्वत के समान विशाल हो गई हैं। ये इतना विराट रूप ले चुकी हैं कि कवि उनको ऊँचे पर्वत के रूप में देखता है। कवि इनको समाप्त करना बहुत ज़रूरी मानता है और कहता है कि इन समस्याओं में से ही इनका समाधान निकलना चाहिए। जैसे हिमालय से गंगा निकलती है और जनमानस को नवजीवन देकर खुशहाल बनाती है, उसी प्रकार भीषण समस्याओं से जूझने वाले ही कोई समाधान निकालेंगे। विरोध का स्वर फूटेगा और समाज में नवीन परिस्थितियाँ निर्मित होंगी। समाज में नवनिर्माण से लोगों का जीवन सुखमय होगा।

शिक्षार्थियों, इस प्रकार हम देखते हैं कि कवि कुरीतियों, अव्यवस्थाओं और शोषण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है और समाधान हेतु प्रेरित भी करता है। प्रत्येक व्यक्ति जागरूक होकर संघर्ष करे और अपने सक्रिय विरोध से परिवर्तन की नई कहानी लिखे। कवि मानता है कि समस्याओं को देखकर घबराना नहीं चाहिए, क्योंकि इनके बीच से ही समाधान की गंगा निकलने की संभावना है।

टिप्पणी

1. पीड़ा के अनेक संदर्भ हैं; जैसे– अन्याय, शोषण, भूख, गरीबी, असमानता, भेदभाव, बीमारी, अशिक्षा इत्यादि।
2. कवि ने यातना, पीड़ा एवं कष्ट को पर्वत की तरह कठोर माना है। इसका आशय यह

है कि यह कष्ट बहुत पुराना है जो पत्थरों की तरह जम गया है। पीड़ा को पर्वत के समान कहने में उपमा अलंकार है।

3. दु:ख के हिमालय रूपी पहाड़ से समाधान अथवा दु:ख का अंत करने वाली गंगा निकलने की बात कही गई है। यहाँ प्रतीकात्मकता तो है ही रूपक अलंकार भी है।

अंश–2

प्रसंग : ग़ज़ल में दुष्यंत कुमार पिछली बात को आगे बढ़ाते हैं और समाज में परिवर्तन पर बल देते हैं। आइए, इस दूसरे अंश को ध्यान से पढ़ लीजिए।

आज यह दीवार, परदों की
तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद
हिलनी चाहिए।

कवि इस ग़ज़ल के दूसरे अंश में कहता है कि हमारे समाज व व्यवस्था में बहुत-सी दीवारें ऐसी हैं जो आपसी मेल-मिलाप व सुख के बीच बाधा बनती रही हैं। ये ऐसी दीवारें हैं जिनकी वजह से हम दूसरे के जीवन को खुशहाल नहीं देख पाते। ये दीवारें हैं भाषा की, जाति की, धर्म की, रंग की और अमीरी-गरीबी की। 'दीवार' शब्द का प्रयोग यहाँ प्रतीकात्मक रूप में किया गया है जिसका आशय है मनुष्य और उसके सुखों की बीच खड़ी दीवारें। आज के सामाजिक परिवेश में अन्याय, शोषण, अत्याचार एवं असमानता की दीवारें थोड़ी कमज़ोर पड़ी हैं, इसलिए कवि इन्हें हिलता हुआ देखता है। लेकिन वह इस दीवार की नींव को हिलाना चाहता है। जिस प्रकार दीवारों पर टंगे परदे हवा से हिलकर भी वहीं टँगे रहते हैं, वैसे ही समस्याएँ थोड़ी-सी हलचल के बावजूद पूर्ववत रहती हैं। इसलिए कवि चाहता है कि दीवार की बुनियाद को हिलाकर स्थायी समाधान निकाला जाए। हर तरह के शोषण व अन्याय को तभी मिटाया जा सकता है जब इनके आधारभूत कारणों को पूरी तरह नष्ट किया जाए। कवि कहता है कि इन समस्याओं को जड़ से मिटाने की ज़रूरत है। यहाँ ग़ौर करने वाली बात यह है कि कवि इस बुनियादी परिवर्तन के लिए सभी लोगों को आगे बढ़कर संघर्ष के लिए प्रेरित कर रहा है अर्थात् समाज में शोषण, अन्याय और अत्याचार की जो बुनियादें सदियों से बनी हैं, उन्हें जड़ से मिटा देने का आह्वान कर रहा है।

अंश–3

प्रसंग – प्रस्तुत अंश में परिवर्तन की लहर को हर जगह देखने की कामना की गई है।

हर सड़क पर, हर गली में,
हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश
चलनी चाहिए।

व्याख्या – कवि अपनी इस ग़ज़ल के तीसरे अंश में समाज के हर वर्ग को जागृत करने का प्रयास करता है। कवि उन्हें भी आंदोलित करता है जो अभी तक विकास की मुख्यधारा से कोसों दूर हैं और जो परिवर्तन करना चाहते हैं। कवि की इच्छा है कि सड़क, गली, नगर और गाँव के हर व्यक्ति में परिवर्तन की चेतना हो।

कवि इस अंश के माध्यम से कहना चाहता है कि सदियों से दलित-शोषित समाज निर्जीव हो गया है, जिसमें जीवन तो है, परंतु जीवंतता नहीं है। निराश होकर वे अपनी अभावग्रस्त दयनीय स्थिति को ही अपनी नियति मान बैठे हैं। अभाव, अपमान, उपेक्षा और उत्पीड़न को वे अपने जीवन का एक हिस्सा मान चुके हैं। ऐसे उपेक्षित जनसमूह को कवि देश की हर सड़क, हर

गली, हर नगर और हर गाँव से अपने मौलिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। कवि प्रत्येक व्यक्ति की व्यथा को वाणी देना चाहता है। कवि इन मृतप्राय अर्थात् निष्क्रिय लोगों से अपने हक़ के लिए व्यवस्था विरोध की बात कहता है। साथ ही हाथ उठाकर लहराते हुए समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज करने की प्रेरणा देता है। कवि इन्हें इतना सक्षम और जागरूक बनाना चाहता है कि समाज की कोई व्यवस्था इनकी उपेक्षा और दमन न कर सके। 'चाहिए' के प्रयोग के माध्यम से कवि ने कहा है कि ऐसा होना चाहिए। यह मेरी इच्छा है।

टिप्पणीः

1. 'हर' शब्द का प्रयोग महत्त्वपूर्ण है। यह शब्द परिवर्तन की प्रत्येक जगह उपस्थिति की आवश्यकता की ओर संकेत करता है। साथ ही इसके प्रयोग से भाषा का चमत्कार एवं विशेष ढंग की लय भी आ गई है।
2. 'लाश' शब्द प्रतीकात्मक है। इसका अर्थ है– निर्जीव या जड़ हो चुके लोग।
3. 'पीर' शब्द पीड़ा के लिए आया है जो सामान्य बोलचाल का है।

पाठगत प्रश्न 7.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कवि ने पीड़ा को किसके समान बताया है?

   (क) नदी के (ख) पर्वत के

   (ग) सागर के (घ) लहरों के

2. जिनमें जीवन है पर जीवंतता नहीं, उन्हें कवि ने किसके समान माना है–

   (क) मशाल के (ख) आग के

   (ग) गंगा के (घ) लाश के

क्रियाकलाप 7.1

आज हमारे सामने कौन-सी ऐसी मुख्य समस्याएँ हैं जिन्हें तत्काल दूर करने हेतु हमें प्रयास शुरू कर देना चाहिए। किन्हीं पाँच समस्याओं के विषय में लिखिए :

- ....
- ....

अंश-4

सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

प्रसंग – प्रस्तुत अंश में दुष्यंत कुमार अपने विरोध-भाव या परिवर्तनकामी चेतना को सकारात्मक बताते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि, मैं केवल विरोध के लिए विरोध नहीं कर रहा हूँ बल्कि समाज बदले यह मेरी इच्छा है।

आइए इस अगले अंश को एक बार फिर ध्यान से पढ़ लें।

व्याख्या – कवि समाज की वर्तमान स्थिति से अंसतुष्ट है और वह इसे बदलना चाहता है। इस बदलाव के लिए वह हंगामा करने को एक ज़रूरी शर्त तो मानता है, लेकिन यह हंगामा वास्तविक या सकारात्मक परिवर्तन के लिए होना चाहिए न कि दिखावे के लिए। कवि का बल समाज की दशा को वास्तविक रूप से बदलने और लोगों के जीवन में और समानता, एकता भाईचारा, लाने पर है।

वह अन्याय और असमानता के शिकार लोगों के जीवन में वास्तविक बदलाव लाना चाहता है। 'सूरत बदलने' से कवि का आशय है कि समाज और उसका स्वरूप बदलना चाहिए।

अंश-5

यहाँ कवि चेतना जागृति के माध्यम से व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव की बात करता है। कवि इस बात का आह्वान करता है कि इस जनविरोधी व्यवस्था के प्रति विद्रोह की आग किसी-न-किसी के भीतर जलती रहनी चाहिए। इसमें 'आग' व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना का प्रतीक है। कवि कहता है कि व्यवस्था के प्रति विद्रोह मेरे हृदय में हो या न हो परंतु समाज में यह कहीं-न-कहीं अवश्य होनी चाहिए। इस ग़ज़ल में यह बात स्पष्ट हुई है कि अब तक हम बहुत अन्याय सह चुके हैं, अब हमें अपने अधिकारों के प्रति सचेत व सक्रिय होना ही होगा। दुष्यंत कुमार कल्पना में नहीं, समाज को यथार्थ रूप में बदलने का आह्वान करते हैं। जो लोग जनविरोधी, अन्यायपूर्ण और अपमानजनक परिस्थितियों में जीने के लिए मज़बूर हैं, उन्हें निरंतर विरोध करना ही होगा। आग का जलते रहना एक सतत प्रक्रिया है। समय के साथ-साथ समाज में नई समस्याएँ व चुनौतियाँ उत्पन्न होती रहती हैं और उन्हें पहचानते हुए हर काल में उन्हें दूर करने का प्रयास करते रहना होगा। एक समस्या आज खत्म हुई तो कई दूसरी मुँह फैलाए निगलने को खड़ी हो जाती हैं। इसलिए नई चुनौतियों को स्वीकार करते हुए संघर्ष की ऊर्जा सदैव बनी रहनी चाहिए।

टिप्पणी

1. कवि ग़ज़ल के माध्यम से हमारे समक्ष कई सवाल खड़े करता है और समाधान का भी संकेत करता है। वह कहता है कि संघर्ष की आग को अपना लक्ष्य पाने तक जलाए रखना होगा।
2. कठोर और जटिल भावों और विचारों को भी सरलता, सहजता एवं मार्मिकता से कहना इस ग़ज़ल की ख़ासियत है।
3. 'आग' यहाँ पर प्रतीक है– परिवर्तनकामी चेतना की।
4. 'मेरे', 'तेरे' 'आग' शब्दों का प्रभावशाली प्रयोग है।

7.7 भाव-सौंदर्य

1. यह कविता देशवासियों का आह्वान है।

टिप्पणी

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

2. सामाजिक समस्याओं से और व्यवस्था की जड़ता, कुरीतियों को लेकर विरोध का भाव है।
3. स्वाधीनता के बाद व्यवस्था का विरोध है।
4. व्यवस्था के खिलाफ परिवर्तन की माँग करता है।
5. कवि बाहरी ढाँचे में नहीं अपितु मूलभूत या आधारभूत परिवर्तन चाहता है अर्थात् समस्या में आमूलचूल परिवर्तन।
6. यह परिवर्तन व्यापक जनसमूह की सहभागिता से संभव होगा।
7. कवि को लगता है कि बहुत से लोग परिवर्तन का दावा करते हैं और मात्र हंगामा करते हैं जबकि जो भी आंदोलन हो या विरोध हो उससे वास्तविक परिवर्तन होना चाहिए।

7.8 शिल्प-सौंदर्य

1. 'चाहिए' शब्द की पुनरावृत्ति कवि के भीतर की छटपटाहट को व्यक्त करता है।
2. कवि ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए प्रतीकात्मकता का सहारा लिया है।
3. 'हर' का बार-बार प्रयोग बलाघात है। अनुप्रास अलंकार। समाज के सभी लोगों को जोड़ने का संकल्प।
4. भाषा और शैली साक्षी संस्कृति को अभिव्यक्त करती है। हिंदी और उर्दू के समन्वित रूप की अभिव्यक्ति।
5. ग़ज़ल सरल भाषा में लिखी गई है। यह सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति में सक्षम है।

7.9 आपने क्या सीखा : चित्रात्मक प्रस्तुति

- 'भेड़िये' शीर्षक कविता में पाशविकता के विरुद्ध मानवता का संघर्ष चित्रित हुआ है। इस संघर्ष तक पहुँचने के लिए आधारभूत क्रमों, जैसे- जागरूकता, चेतना, सामूहिकता, साहसिकता आदि के बारे में उल्लेख।
- पाशविकता को दूर भगाने और मनुष्यता की स्थापना करने का हमारा भी दायित्व है, जिसे पूरा करना हमारा परम कर्त्तव्य है।
- सामूहिक चेतना के विकास का बहुत महत्व है। जनशक्ति के सामने किसी भी मनुष्य-विरोधी सत्ता का वर्चस्व टिकना संभव नहीं है।
- आज के संदर्भ में भी इस कविता की अर्थवत्ता है।
- कविता की भाषा प्रतीकात्मक और लयात्मक है। देशज शब्दों का खूब प्रयोग हुआ है।
- कविता की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है।

साठोत्तरी कविता

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	दुष्यंत कुमार
• मनुष्य एवं भेड़िए के बीच अंतर	• समस्या एवं समाधान
• 'भेड़िए' की प्रतीकात्मकता	• बुनियादी परिवर्तन की आवश्यकता
• जनता की एकजुटता का महत्व	• परिवर्तनकामी चेतना का प्रसार
• जनशक्ति में दृढ़ विश्वास	• चेतना की अग्नि कहीं-न-कहीं होनी चाहिए
• संकेतात्मकता	• प्रतीकात्मकता
• क्रिया शब्द	• उपमा और रूपक अलंकार
• आम बोलचाल की भाषा	• ग़ज़ल
	• बोलचाल की भाषा

7.10 सीखने के प्रतिफल

- अपने परिवेशगत अनुभवों पर अपनी स्वतंत्र और स्पष्ट राय व्यक्त करते हैं।
- पाठ्य-सामग्री में शामिल रचनाओं के साथ ही इतर रचनाओं–कविता, कहानी, एकांकी और समाचारपत्र पढ़ते हैं।
- साहित्य की विविध विधाओं में प्रयुक्त भाषा की बारीकियों पर चर्चा करते हैं; जैसे - विशिष्ट शब्द, वाक्य, शैली एवं संरचना।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं को पढ़ते हुए उनके सौंदर्य-पक्ष एवं व्याकरणिक संरचनाओं पर चर्चा करते हैं।
- प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- हिंदी भाषा एवं साहित्य की परंपरा की समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।
- सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र एवं भाषा-संबंधी) के प्रति सकारात्मक एवं विवेकपूर्ण समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।
- भाषा-कौशलों के माध्यम से जीवन-कौशलों को आत्मसात करते हैं और अभिव्यक्त करते हैं।

7.11 योग्यता-विस्तार : कवि परिचय

(क) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का जन्म 15 सितंबर, 1927 ई को बस्ती जिले के पिकोरा नामक गाँव में हुआ था। प्रयाग विश्वविद्यालय से एम. ए. करने बाद उन्होंने विभिन्न पदों पर नौकरी की। उन्होंने आकाशवाणी के लखनऊ और दिल्ली केन्द्रों में भी काम किया। लगभग सत्रह वर्षों तक उन्होंने हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका 'दिनमान' में काम किया। उन्होंने बच्चों की मासिक पत्रिका 'पराग' का भी संपादन किया था।

सर्वेश्वर की पहली कविता 1941 में 'आर्यमित्र' में प्रकाशित हुई थी। 1951 में उनकी कई कविताएँ 'प्रतीक' में प्रकाशित और चर्चित हुईं। कवि की साहित्यिक यात्रा 1941 से 1983 तक की है। कवि अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' में कविताएँ संकलित होने के बाद उन्हें अत्यधिक ख्याति मिली। उनके काव्य-संकलन हैं– 'काठ की घंटियाँ', 'बाँस का पुल', 'एक सूनी नाव', 'गरम हवाएँ', 'कुआनो नदी', 'जंगल का दर्द', 'खूँटियों पर टँगे लोग', 'कोई मेरे साथ चले', 'बतूता का जूता' और 'महँगू की टाई'। अंतिम दोनों पुस्तकें बाल काव्य हैं।

23 सितंबर, 1983 को मात्र 57 वर्षों की आयु में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का निधन हो गया।

(ख) दुष्यंत कुमार

दुष्यंत कुमार का जन्म उत्तर प्रदेश में बिजनौर जनपद के राजपुर नवादा गाँव में 1 सितंबर, 1933 को हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के विद्यालय में हुई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. और हिंदी साहित्य में एम.ए. किया। उन्होंने आकाशवाणी, दिल्ली में स्क्रिप्ट राइटर के रूप में कार्य किया। कुछ समय के लिए मध्य प्रदेश के संस्कृत संचालनालय के भाषा-विभाग में सहायक संचालक पद पर कार्यरत रहे। उन्होंने आदिम जाति जनकल्याण विभाग में भी कार्य किया।

'सूर्य का स्वागत' शीर्षक से उनकी कविताओं का संग्रह सन् 1957 में प्रकाशित हुआ। इसके बाद 'आवाज़ों के घेरे' कविता-संग्रह (1963) और 'एक कंठ विषपायी' काव्यनाटक (सन् 1964) प्रकाशित हुआ। बाद में 'छोटे-छोटे सवाल' और 'आँगन में एक वृक्ष' उपन्यास प्रकाशित हुए। तीसरा कविता-संग्रह 'जलते हुए वन का वसंत' (1973) और लोकप्रिय ग़ज़ल-संग्रह 'साये में धूप' (सन् 1975) प्रकाशित हुआ। केवल 42 वर्ष की उम्र में इनकी मृत्यु सन् 1975 में हुई।

दुष्यंत कुमार मानते थे कि उन्होंने उर्दू शब्दों को उस रूप में इस्तेमाल किया है, जिस रूप में वे हिंदी में घुल-मिल गए हैं। उनकी सदैव यही कोशिश रही कि उर्दू और हिंदी एक-दूसरे के बेहद करीब आ सकें। उन्होंने अपनी ग़ज़ल उस भाषा-शैली में लिखी जो वे बोलते और अधिक से अधिक लोग समझते थे। सरल, सुबोध और प्रखर भाषा के कारण वे लोकप्रिय शायर बन गए।

7.12 पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित अंशों का काव्य-सौंदर्य लिखिए :

   (i) उसमें और तुममें
   यही बुनियादी फ़र्क है
   भेड़िया मशाल नहीं जला सकता।

   (ii) सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
   मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

2. भेड़िया क्यों गुर्राता है ? कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।
3. कविता में भेड़िया किसका प्रतीक है? स्पष्ट कीजिए।
4. आपकी दृष्टि में भेड़िये को भगाना क्यों जरूरी है? वर्णन कीजिए।
5. 'भेड़िया' कविता की अंतिम पंक्ति में 'और तुम?' से कवि का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।
6. अपने परिवेश से एक उदाहरण देते हुए लिखिए कि सामूहिक चेतना के विकास में हमारी क्या भूमिका हो सकती है।
7. 'भेड़िया' कविता की भाषिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
8. दुष्यंत कुमार ने 'पीर' को 'पर्वत' के समान क्यों कहा है?
9. ग़ज़ल के माध्यम से कवि किस प्रकार का परिवर्तन चाहता है? प्रस्तुत कीजिए।
10. 'ग़ज़ल' के संदर्भ में 'लाश' का आशय स्पष्ट कीजिए।

7.13 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न के उत्तर

7.1 1. (ग) 2. (ग) 3. (ग) 4. भेड़िया - शोषक
मशाल-- सामूहिक चेतना
तुम-जनशक्ति

7.2 1. (ख) 2. (क)

7.3 1. (ख) 2. (घ)

बोध प्रश्न-7.1

1. (घ) 2. (ख) 3. (ग)